Reg. No. | | | | | | | | | |

HNS 504

III Semester M.A. Degree Examination, December 2018
HINDI (Soft Core – I)
तुलसीदास
Tulasidas

Time : 3 Hours Max. Marks : 70

I. **सही** उत्तर चुनकर लिखिए । **(1×10=10)**

1) तुलसीदास के आराध्य देव कौन थे ?

अ) राम आ) कृष्ण इ) शंकर ई) विष्णु

2) तुलसी के समय राजा और प्रजा किसी के समक्ष कोई _____ न था ।

अ) धर्म आ) संस्कार इ) भक्ति ई) नैतिक आदर्श

3) तुलसी के अनुसार ज्ञान दीपक है, तो भक्ति _____ है ।

अ) खुशी आ) आनंद इ) चिन्तामणि ई) उल्लास

4) सुमन्त्र कहाँ के मंत्री थे ?

अ) पंचवटी आ) अयोध्या इ) चित्रकूट ई) लंका

5) कैकेयी की मति को किसने फेरा ?

अ) कौशल्या आ) सुमित्रा इ) सीता ई) मंथरा

6) निषादराज किसके मित्र थे ?

अ) राम आ) लक्ष्मण इ) भरत ई) शत्रुघ्न

7) राम को चित्रकूट पर्वत पर निवास करने के लिए _____ कहते हैं ।

अ) हनुमान आ) वाल्मीकि इ) वशिष्ट ई) गौतम

8) राजा दशरथ को _____ के पिता ने श्राप दिया था ।

अ) हरिशकुमार आ) पवनकुमार इ) इन्द्रकुमार ई) श्रवणकुमार

9) मुनिश्रेष्ठ _____ मुनि को कहा गया है ।

अ) भरद्वाज आ) विश्वामित्र इ) वशिष्ठ ई) अत्रि

10) _____ तुलसीदास की कविता का वसन्त काल है ।

अ) बालकाण्ड आ) अयोध्याकाण्ड इ) उत्तरकाण्ड ई) लंकाकाण्ड

II. किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर लिखिए । **(4×10=40)**

1) तुलसीदास के व्यक्तिगत जीवन पर प्रकाश डालिए ।
2) ''तुलसीदास लोकमंगल के कवि है'' _____ स्पष्ट कीजिए ।
3) दशरथ और कैकेयी संवाद को अपने शब्दों में लिखिए ।
4) भरत के भ्रातृत्वप्रेम को पठित काण्ड के आधार पर समझाइए ।
5) 'अयोध्याकाण्ड' का सारांश अपने शब्दों में लिखिए ।
6) 'अयोध्याकाण्ड' के आधार पर कैकेयी का चारित्रिक चित्रण कीजिए ।

III. किन्हीं **चार** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए । **(4×5=20)**

1) जब ते रामु ब्याहि घर आए । नित नव मंगल मोद बधाए ।
भुवन चारिदस भूधर भारी । सुकृत मेघ बरषहिं सुख बारी ।।
2) कहइ भुआलु सुनिअ मुनिनायक । भय राम सव विधि सव लायक ।
सेवक सचिव सकल पुरबासी । जे हमार अरि मित्र उदासी ।।
3) चौकें चारू मुमित्राँ पूरी । मनिमय विविध भाँति अति करी ।
आनंद मगन राम महतारी । दिए दान बहु विप्र हँकारी ।।
4) भरत मातु पहिं गई बिलखानी । का अनमनि हस कह हँसि रानी ।
ऊतरू देह न लेइ उसासू । नारि चरित करि ठारइ आँसू ।।
5) तुम्ह पूँछहु मैं कहत डेराऊँ । घरेहूँ मोर घरफोरी नाऊँ ।
सजि प्रतीति बहुवीधि गढी छोली । अवध साढसाती तब बोली ।।
6) बार-बार कह राउ सुमुखि सलोचनी पिकबचनि ।
कारन मोहि सुनाउ गजगामिनी निज कोप कर ।